International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-1 Jan-Feb-2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

# भारत में नारी मुक्ति आन्दोलन

**Neeta devi**
Research scholar
Department of hindi
Kalinga university raipur

**Dr vinod kumar yadav**
Associate professor
Department of hindi
Kalinga university raipur

***सार***

*भारतीय नारी मुक्ति आन्दोलन पश्चिम के नारी मुक्ति संघर्ष से भिन्न है। पश्चिम में स्त्रियों ने लगभग एक सदी की लम्बी अवधि तक अपनी मुक्ति की लड़ाई पुरुषों से मुक्ति के रूप में की। पर भारत में यह लड़ाई विदेशी दासता व प्राचीन रुढ़ियों के विरुद्ध एक साथ लड़ी गई, जिसमें स्त्री-पुरुष प्रतिद्वन्द्वी नहीं सहयोगी थे। इसी कारण भारत में 'महिला दिवस' भी संघर्ष दिवस' न होकर 'प्रेरणा दिवस' के रूप में मान्यता प्राप्त है। भारत में सरोजिनी नायडू का जन्म दिवस १३ फरवरी 'महिला दिवस' के रूप में तथा २२ फरवरी कस्तूरबा गाँधी का जन्म दिवस 'मातृ-दिवस' के रूप में मान्यता प्राप्त है। भारत में नारी की मुक्ति का अर्थ पुरुष सता से मुक्ति कभी नहीं रहा। राष्ट्रीय समस्याओं की स्त्रियों ने प्रारम्भ से पुरुषों के साथ मिलकर ही सुलझाया। भारत पर जब कभी आक्रमण हुए उस समय राज्य का प्रशासन स्वयं सँभाल, युद्ध के लिए पति और पुत्रों में साहस का संचार करनेवाली स्त्रियों की अनेक कथाएँ इतिहास में हैं। १८५७ ई. के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, जमानी बेगम, देवी चौधरानी, कितूर की रानी चेनम्मा जैसी वीर महिलाओं ने अपनी राष्ट्रीय चेतना का परिचय दिया।*

***मुख्य शब्द:*** *नारी मुक्ति आन्दोलन, भारतीय नारी,*

## परिचय

भारत में नारी मुक्ति आन्दोलन कब हुआ था इसका प्रमाणित समय बताना कठिन है। इसके बारे में कोई निश्चित प्रमाणित सामग्री उपलब्ध नहीं है। उतर वैदिक । काल से नारी पर जैसे-जैसे बन्धन जटिल होते गये उसमें मुक्ति की कामना भी तीव्र होती गई। पर कालान्तर में नारी ने अपने जीवन की स्थितियों को नियति मान उसे लगभग स्वीकार कर लिया। मध्यकाल से नवजागरण काल तक का इतिहास इसी समझौते का प्रत्यक्ष प्रमाण है। भारत में नारी की मुक्ति का अर्थ पुरुष सता से मुक्ति कभी नहीं रहा। राष्ट्रीय समस्याओं की स्त्रियों ने प्रारम्भ से पुरुषों के साथ मिलकर ही सुलझाया। भारत पर जब कभी आक्रमण हुए उस समय राज्य का प्रशासन स्वयं सँभाल, युद्ध के लिए पति और पुत्रों में साहस का संचार करनेवाली स्त्रियों की अनेक कथाएँ इतिहास में हैं। १८५७ ई. के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, जमानी बेगम, देवी चौधरानी, कितूर की रानी चेनम्मा जैसी वीर महिलाओं ने अपनी राष्ट्रीय चेतना का परिचय दिया।

## भारत में सामाजिक पुनर्जागरण और राजनीतिक चेतना का विकास

इस काल में भारतीय समाज को अज्ञानता, गरीब, शोषण, दासता और परम्परागत रुढ़ियों से एक साथ संघर्ष करना पड़ा। भारतीय नारी सदियों से पुरुष- प्रधान व्यवस्था और पतनोन्मुख सामाजिक स्थितियों में रहने को बाध्य थी। उसकी गणना धीरे-धीरे दलित वर्ग में होने लगी। भारत का अधिकांश सामाजिक सुधारवादी आन्दोलन नारी जीवन के सुधार को ही अपना लक्ष्य मानता रहा है। भारतीय नारी के मुक्ति - संघर्ष को सामाजिक व राजनीतिक स्तरों पर अलग करके नहीं देखा जा सकता। भारतीय नारी का यह मुक्ति संघर्ष उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही शुरु हो गया था। जब बंगाल में ब्रह्म समाज, बम्बई में प्रार्थना समाज व उत्तर भारत और पंजाब में आर्य समाज की स्थापना हुई। ये तीनों संस्थाएँ समाज-सुधार को लक्ष्य बनाकर कार्य करती रही। इन्होंने अपने कार्यक्रमों में नारी जागरण को प्रमुख स्थान दिया। राजाराम मोहनराय, स्वामी दयानंद, महादेव रानाड़े जैसे सुधारकों ने नारी की स्थिति को परखा। उन्होंने स्त्री शिक्षा को महत्व दिया।

सन् १८२९ ई. में सती-प्रथा को कानूनन समाप्त कर दिया गया। सन् १८५६ ई. में विधवा-विवाह को कानूनी मान्यता दी गई। ये दोनों कानून स्त्रियों को सामजिक अन्याय से मुक्ति दिलाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम थे। लेकिन इन कानूनों या सुधारों की सफलता के लिए स्त्री शिक्षा एक अनिवार्य शर्त थी। प्रमुख शिक्षा - शास्त्री श्री ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने इसी कमी को दूर करने के लिए अथाग प्रयास किया, फलस्वरुप उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में पहला महिला महाविद्यालय- बेडले कोलेज- कलकता में स्थापित हुआ। लेकिन स्त्री शिक्षा की प्रगति फिर भी बहुत धीमी रही। सामाजिक रूढ़िवाद इसमें सबसे बड़ी बाधा थी।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में भारत में थियोसोफिकल सोसायटी की नींव डालने वाली एक विदेशी महिला सुश्री ब्लावत्स्की ने नारी - जागरण का कार्य अपने हाथों में लिया। इन्हीं के थियोसोफिकल सोसायटी की बैठकों में ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नींव रखी गई। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ के आरम्भ में रामकृष्ण परमहंस व स्वामी विवेकानंद की शिष्या मार्गरिट नोबेल ने बंगाल को अपना कार्य क्षेत्र बनाया और भारतीय स्त्रियों में शिक्षा के माध्यम से जागृति लाने का बीड़ा उठाया।

यह शिक्षा केवल जानकारी के लिए न थी अपितु विदेशी शासन की दासता के विरुद्ध जागरण की शिक्षा भी थी। तत्पश्चात् थियोसोफिकल सोसायटी का नेतृत्व संभालने वाली एनी बेसेन्ट ने नारी जागरण के कार्य को आगे बढ़ाया। उन्होंने मार्गरिट नोबेल व मार्गरिट काजिन्स के साथ मिलकर 'होमरुल लीग' की स्थापना की। सन् १९१७ ई. में उन्होंने कलकता अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष पद प्राप्त कर देश के राजनीतिक जीवन में महिलाओं की प्रतिगामिता सिद्ध की। उनकी अध्यक्षता में स्त्रियों के मताधिकार का प्रस्ताव पास कराया गया। इसके बाद गाँधीजी की अनुयायी 'मैंडलीन स्लेड' जो बाद में मीरा बेन के नाम से प्रसिद्ध हुई, भारतीय स्त्री में नई चेतना जागृत करने के लिए आगे आई।

सन् १९१७ ई. में मद्रास में श्रीमती मार्गरिड कजिन्स ने अखिल भारतीय स्तर पर एक महिला संगठन 'इण्डियन विमेन्स एसोसिएशन' की स्थापना की। इसी वर्ष श्रीमती सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में महिलाओं ने मताधिकार की माँग की राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय भाग लेने का भारतीय स्त्रियों का यह पहला प्रयत्न था। सन् १९२५ ई. में पहली बार सरोजिनी नायडू कांग्रेस की अध्यक्षा बनीं। सन् १९२६ ई. में भारत

में पहली बार स्त्रियों ने चुनाव में भाग लिया। आम चुनाव के बाद सन् १९२७ ई. में महिलाएँ विधान सभाओं में आई, क्योंकि चुनाव लड़ने के अधिकार कुछ शर्तो पर स्त्रियों को दिये गये थे।

सन् १९२७ ई. में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन संगठन की स्थापना हुई, स्त्रियों में राजनीतिक चेतना जागृत करने में इसका प्रमुख योगदान था। सन् १९२९ ई. में बाल-विवाह निषेध अधिनियम पास हुआ। जो महिलाओं की सामाजिक स्थिति सुधारने में सहायक सिद्ध हुआ। इसने स्त्री - शिक्षा में उन्नति तथा व्यक्तित्व-विकास केअवसरों में वृद्धि की। सन् १९३० ई. के नमक सत्याग्रह, १९३२ ई. के सविनय अवज्ञा आन्दोलन, १९४२ ई. में भारत छोड़ो आन्दोलन में स्त्रियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। कस्तूरबा गाँधी, अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी आदि स्त्रियाँ उपरोक्त आन्दोलन से जुड़ी रहीं।

इन आन्दोलनों में भाग लेने के साथ वैधानिक क्षेत्र में भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व दिखाई देता है। पहले 'गोलमेज सम्मेलन' में सरोजनी नायडु ने महिलाओं का प्रतिनिधित्व किया था। सन् १९३७ ई. में कांग्रेस मंत्रीमण्डल बने जिसमें रेणुका रे, अम्मुस्वामी नाथन, राधा बाई सुब्रामण्यम् केन्द्रीय विधान सभा की सदस्या बनीं।

इसी प्रकार सरोजनी नायडू, राजकुमारी अमृत कौर, लीला रे, दुर्गा बाई देशमुख, सुचेता कृपलानी आदि ने संविधान निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। संविधान में प्रदत समान अधिकारों के फलस्वरुप आज भारतीय समाज में कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ ऊँचे पद पर पहुँचने के लिए स्त्रियाँ अयोग्य मानी जायें। पर शिक्षा व सामाजिक क्षेत्र में अभी बहुत पिछड़ी होने से भारतीय नारी का यह मुक्ति - संघर्ष, स्वतन्त्रता, और समान अवसर मिलने के साथ ही समाप्त नहीं होता, बल्कि राजनीति व सामाजिक अधिकारों के बीच की खाई पाटने के लिए और भी तीव्र गति से आरम्भ होता है। इसीलिए स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् महिला - संगठनों व महिला विधायकों के संयुक्त प्रयत्नों से अनेक सुधार कानून पास किये गये। राष्ट्रव्यापी गैर राजनीतिक महिला संस्थाओं की स्थापना हुई, उन्होंने स्त्रियों के सामाजिक जागरण, शैक्षणिक उत्थान और महिला एवं बाल कल्याण की दिशा में एक साथ कार्य आरंभ कर दिया। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद महिलाएँ अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रगति की दिशा में अग्रसर हुई। आज देश में जो महिला संगठन कार्यरत हैं उनमें - केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, महिला - बाल - कल्याण परियोजनाएँ, कस्तुरबा स्मारक निधि, भारतीय ग्रामीण महिला संघ, अखिल भारतीय महिला परिषद की विभिन्न शाखाएँ, नारी रक्षा समिति, वाई. डबल्यु.सी.ए. वीर नारी - संगठन आदि प्रमुख हैं। वर्ष १९७५ को 'महिला वर्ष' घोषित किया। यह महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण घटना थी। केन्द्र व राज्य स्तर पर महिला कल्याण और महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार लाने के लिए इसी वर्ष कई-नई योजनाएँ बनाई गई। कुछ नये कानून व कानून संशोधन भी प्रस्तुत हुए। इस तरह भारतीय नारी मुक्ति आन्दोलन पश्चिम के नारी मुक्ति संघर्ष से भिन्न है। पश्चिम में स्त्रियों ने लगभग एक सदी की लम्बी अवधि तक अपनी मुक्ति की लड़ाई पुरुषों से मुक्ति के रूप में की। पर भारत में यह लड़ाई विदेशी दासता व प्राचीन रुढ़ियों के विरुद्ध एक साथ लड़ी गई, जिसमें स्त्री-पुरुष प्रतिद्वन्द्वी नहीं सहयोगी थे। इसी कारण भारत में 'महिला दिवस' भी संघर्ष दिवस' न होकर 'प्रेरणा दिवस' के रूप में मान्यता प्राप्त है। भारत में सरोजिनी नायडू का जन्म दिवस १३ फरवरी 'महिला दिवस' के रूप में तथा २२ फरवरी कस्तूरबा गाँधी का जन्म दिवस 'मातृ-दिवस' के रूप में मान्यता प्राप्त है। दक्षिण भारत के कुछ स्थानों में कितूर की रानी चेन्नम्मा का जन्म दिवस २३ अक्तूबर 'महिला दिवस' के रूप में स्मरण किया जाता है।

ऐतिहासिक आधार के तौर पर हम कह सकते हैं कि महिलाओं ने अपनी लड़ाई खुद लड़ी है। वह अपने बलबूते चलकर अपना स्थान हांसिल किया एवं इस कार्य में वह सफल भी रही है। नारी एक ऐसी जीती जागती मिसाल बनकर उभरी है, जो कभी भी फट सकती है। नारी ने स्वयं अंगारों पर चलना सिख लिया है। इतिहास यहीं दर्शाता हैं कि नारी ने स्वयं अपना भाग्य - निर्माण किया है।

समाज-कल्याण, संस्कृति, ट्रेड यूनियनों, व्यापार, सभी जगह स्त्रियाँ महत्वपूर्ण और दायित्वपूर्ण पद सँभाले हुए है। पर इनकी दूसरी लड़ाई अभी शेष है। यह लड़ाई है, सामाजिक भेदभाव और सामाजिक अन्याय दूर करने की। संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्तावों और 'अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन' के नियमानुसार स्त्रियों को सभी क्षेत्रों में समानाधिकार प्राप्त हैं। पर व्यवहार में भेदभाव हर स्थान पर विद्यमान हैं। आपकी व्यवहार में, वेतन मान में, शिक्षा में, नौकरी के अवसरों में। शिक्षा में समानाधिकार की बात 'यूनेस्को' के आँकडों में एक व्यंग्य सी लगती है। सामाजिक शोषण से मुक्त न हो पाने का कारण नारी का स्वभावगत दुर्बलता ही है। समस्या की जड़ वास्तव नारी के भीतर छीपी असुरक्षा की भावना है। बौद्धिक विकास और वैज्ञानिक तर्क सम्मत दृष्टिकोण में सुधार हो, संकुचित सीमाओं का विस्तार हो, कमियों और हीनताओं का उदात रूपान्तरण हो तो स्त्री की स्थिति में सुधार हो सकता है।

## उद्देश्य

1. भारतीय नारी मुक्ति आन्दोलन पश्चिम के नारी मुक्ति संघर्ष

2. भारत में नारी की मुक्ति का अर्थ पुरुष सता से मुक्ति कभी नहीं रहा।

## भारतीय नारी का संघर्ष

पुरुषों के खिलाफ नहीं, उस वातावरण के विरुद्ध है जिसे बदलने की आवश्यकता है। नारी मुक्ति एक स्थिति है, कोई नारा नहीं। स्थिति में परिवर्तन तर्क सिद्ध रवैये, आत्म-विश्लेषण, सुधार - परिष्कार से लाया जा सकता है। नारी से मानवी होने के लिए उसे बौद्धिक स्तर पर विकास करना होगा। उसे तर्कशील वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। अपने नारीत्व के आग्रहों से ऊपर उठकर स्वतन्त्र चेता, उदारचेता, व्यक्तित्व लेकर स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में सहज मैत्रीभाव विकसित करना होगा।

भारत में नारी मुक्ति आन्दोलन के विफलता का कारण पश्चिमी आन्दोलन की नकल ही है। साथ ही आन्दोलन का अपने शैशवकाल से ही सनसनी खेज पत्रकारिता,महिला - संस्थाओं की आपसी राजनीति और किन्हीं मामलों में अति प्रचार से झूठे प्रचार तक का शिकार हो जाता है। तथा आन्दोलन का अधिकतर शहरी क्षेत्रों के आभिजात्य वर्ग तक सीमित होना भी एक कारण है। नैतिक मूल्यों से भोगवादी मूल्यों की ओर बढ़ते भारतीय समाज में, जब भ्रष्ट सामन्तवादी शक्तियों का गठबन्धन नारी शोषण की नयी स्थितियों को आश्रय दे रहा हो, तो राजनीति प्रेरित सुविधा भोगी महिला नेतृत्व इसे सही दिशा नहीं दे सकता। साथ ही नारी को अपना लक्ष्य स्वयं निर्धारित करना है कि उसे मुक्ति किससे चाहिए ? पुरुष से अथवा व्यवस्था से अथवा समाज से। अधिकार अर्जित करने की वस्तु है माँगने की नहीं। संघर्ष से अधिकार मिल भी जाये तो उसमें तनाव - टकराव की स्थितियाँ बनी रहती हैं और उन्हीं का परिणाम होता है विघटन, तनाव, कुण्ठा आदि। नारी अपने लक्ष्य की प्राप्ति की और अग्रेसर होना चाहती है।

**पश्चिम में नारी मुक्ति आंदोलन:-**

सर्वप्रथम अठारहवीं शताब्दी में 'मेरी वाल स्टोन क्राफ्ट' ने इग्लेंड में नारी के अधिकारों के लिए आवाज उठाई थी। विपरीत परिस्थितियों में अदम्य साहस दिखाने के कारण आज भी उसे मुक्ति आन्दोलन की सूत्रधार कहा जाता है, तदुपरान्त १८८४ ई. में फ्रांस की 'फ्लोरा ट्रिस्टन' ने महिलाओं की माँगे प्रस्तुत करने के लिए एक महिला संगठन की स्थापना की। इंग्लैण्ड की 'कैरोलीन नार्टस' ने महिलाओं को पुरुष के समान अधिकार दिये जाने की माँग को लेकर आन्दोलन शुरु किया, जो कुचल दिया गया था। जान स्टुअर्ट मिल ने इंग्लैण्ड में अपनी पुस्तक 'द सब्जेक्शन आफ विमेन' द्वारा नारी मुक्ति और उसके मताधिकारों के लिए आवाज उठाई।

'हाउस आफ कामन्स' में महिला मताधिकार के पक्ष में उन्होंने भाषण दिया। साथ ही उन्होंने कहा कि स्त्री और पुरुष के बीच सामाजिक सम्बन्धों का संचालन करने वाले नियम जो एक सेक्स को श्रेष्ठ और दूसरे को उसके अधीन बताते हैं। अपने- आप में गलत है। इन्हें पूर्ण समानता के नियम द्वारा बदला दिया जाना चाहिए, ताकि न तो किसी एक के पक्ष में अधिक शक्ति रहे और न ही किसी एक की अधीनता।

८ मार्च १८५७ ई. को न्युयोर्क की सड़कों पर कपड़ा मिलों की कामगार स्त्रियों ने अधिक वेतन और काम के घण्टे घटाने की माँग को लेकर एक असफल प्रदर्शन किया था जिसे उस समय की ट्रेड यूनियनों ने भी पसन्द किया। आज भी उसी संघर्ष की याद में ८ मार्च का दिन 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला संघर्ष दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

सन् १८६५ ई. में ऐलिजाबेथ मिलर, लूसी स्टोन ने अमेरिका में महिला मुक्ति आन्दोलन शुरु किया। सन् १८६९ ई. में हेग में महिलाओं की एक युद्ध-विरोधी अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस हुई। सन् १९१० ई. में समाजवादी महिलाओं की एक कान्फ्रेंस में पहली बार ८ मार्च का दिन 'महिला संघर्ष दिवस' के रूप में स्वीकृत किया गया।

८ मार्च १९१३ ई. को 'जार' के रूस में महिलाओं ने सड़कों पर एक जुलूस निकाला और युद्ध - विरोधी नारे लगाये। इस आन्दोलन में गति आई, प्रथम विश्व युद्ध के बाद। महिलाओं के युद्ध विरोधी नारों से सारा यूरोप गूंजने लगा, मार्च १९२३ ई. में हजारों स्त्रियों ने पेरिस की सड़कों पर प्रदर्शन किया। सन् १९३६ ई. में फ्रासिज्म के विरोध में हजारों स्पेनिस स्त्रियों ने प्रदर्शन किया, क्योंकि जर्मनी में उस समय स्त्रियों को युद्ध हेतु अधिक बच्चे पैदा करने के लिए प्रेरित किया जा रहा था। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद आन्दोलन ने और जोर पकड़ा।

सन् १९४५ ई. में पेरिस में 'विमेन्स इन्टरनेशनल डेमोक्रेटीक फ्रेडरेशन' की स्थापना कर सभी देशों की स्त्रियों द्वारा आन्दोलन को विश्व स्तर पर संगठित रूप में चलाने का निश्चय किया गया। सन् १९४६ ई. से १९६६ ई. तक अगले २० वर्ष सर गर्मियों के रहे। महिला अधिकारों की लड़ाई के साथ निरस्त्रीकरण और शांति के पक्ष में भी जोरदार आवाज उठाई जाने लगी। अनेक महिला संगठन आन्दोलन को बल देने के लिए सामने आए, जिनमें 'नाऊ' प्रमुख थी। इसकी संस्थापक बेट्टी 'फ्राइडन' थी। इस संगठन का मुख्य आधार बुनियादी मानवीय अधिकारों को लेकर चला था। स्त्रियों को स्वयं निर्णय लेने का अधिकार, अपनी जीवन पद्धति चुनने का अधिकार आदि को इसमें महत्व दिया गया।

२६ अगस्त १९७० ई. को अमेरिकी महिलाओं को मताधिकार मिलने की ५० वीं वर्षगाँठ थी उस दिन न्यूयोर्क, फिलाडेल्फिया, वॉशिंग्टन, बोस्टन, पिटबर्ग, लास एंजिल्स की सड़कों पर स्त्रियों में जुलूस निकाले, अनेक प्रदर्शन किये। उस समय महिलाओं के नारे थे- 'हमे आजाद करो.... हमें पुरुषों के बराबर अधिकार दो... हमारे साथ द्वितीय श्रेणी के नागरिकों का व्यवहार बंद करो... हम अपने शरीर पर अपना अधिकार चाहती हैं... लैंगिक भेदभाव बंद करो... स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। 'इसके साथ ही महिलाओं ने प्रसाधन सामग्री से रद्दी की टोकरियाँ भर दी।

भीतरी वस्त्रों की होली जलाई, यह इस बात की प्रतीक थी कि पुरुषों ने स्त्रियों पर कामुकता थोपी है और अब वे पुरुषों के लिए सजने-सँवरने से इन्कार करती है। आन्दोलन ने यहीं से उग्र रूप धारण कर लिया।

## निष्कर्ष

भारतीय समाज को अज्ञानता, गरीब, शोषण, दासता और परम्परागत रुढ़ियों से एक साथ संघर्ष करना पड़ा। भारतीय नारी सदियों से पुरुष- प्रधान व्यवस्था और पतनोन्मुख सामाजिक स्थितियों में रहने को बाध्य थी। उसकी गणना धीरे-धीरे दलित वर्ग में होने लगी। भारत का अधिकांश सामाजिक सुधारवादी आन्दोलन नारी जीवन के सुधार को ही अपना लक्ष्य मानता रहा है। भारतीय नारी के मुक्ति - संघर्ष को सामाजिक व राजनीतिक स्तरों पर अलग करके नहीं देखा जा सकता। भारतीय नारी का यह मुक्ति संघर्ष उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही शुरु हो गया था। जब बंगाल में ब्रह्म समाज, बम्बई में प्रार्थना समाज व उत्तर भारत और पंजाब में आर्य समाज की स्थापना हुई। ये तीनों संस्थाएँ समाज-सुधार को लक्ष्य बनाकर कार्य करती रही। इन्होंने अपने कार्यक्रमों में नारी जागरण को प्रमुख स्थान दिया। राजाराम मोहनराय, स्वामी दयानंद, महादेव रानाड़े जैसे सुधारकों ने नारी की स्थिति को परखा। उन्होंने स्त्री शिक्षा को महत्व दिया।

## संदर्भ

1. शर्मा, अंजु (2019) साकेत एक विवेचन, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 20, 32, 52
2. शर्मा, नासिरा (2018) औरत के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 14, 7,
3. शर्मा, पवित्र कुमार (2019) नारी : कभी ना हारी, फिनिक्स बुक्स, दिल्ली, 69, 73, 84
4. शर्मा, रामविलास (2019) प्रेमचन्द और उसका युग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 21, 23 46 शर्मा, हरिचरण (2005) हिन्दी साहित्य का इतिहास, इंडिया बुक्स हाउस जयपुर, पृ0 171, 174, 30, 84
5. शास्त्री, श्यामसुन्दर (2010) आखिर नारी है क्या ? कुबेर हर्षित प्रकाशन जयपुर, पृ0 209215, 230
6. सिन्हा, इन्द्रमोहन कुमार (1985) प्रेमचन्द युगीन भारतीय समाज, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना, पृ0 27, 2, 427

7. सिंह, निर्मला(2015) आज की शकुन्तला, नमन प्रकाशन दिल्ली, पृ0 76, 77

8. –सिंह, महीप (2018) प्रेमचन्द की श्रेष्ठ हिन्दी कहानियां, राजश्री प्रकाशन, पृ० 102, 104

9. सरस्वती, ओम आनन्द (2018) मीरायन, मीरा स्मृति संस्थान, राज0, पृ० 11, 17, 20

10. सिंह, शरद् (2017) पिछले पन्ने की औरतें, सामयिक प्रकाशन, पृ0 6, 7, 11, 28

11. त्रिपाठी, मालवीय (2018) विश्व सभ्यता का संक्षिप्त इतिहास, नमन प्रकाशन दिल्ली पृ०

12. अंग्रेजी साहित्य एवं शब्द कोस अरबन फण्डा मैन्टल आफ एपिक्स आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन न्यु स्टैण्डर्ड डिक्शनरी आफ इग्लिंश् लैंग्युएज भाग - 4, पृ0 44, 45

13. लुई विर्थ अर्बेनाइजेशन एस अर्वे आवर लाइफ, सारोकिन एण्ड निजरमैन पृ0 50, 52

14. आओ पेपे, घर चलें- प्रभा खेतान, सरस्वती विहार, शाहदरा, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९९०

15. तालाबंदी - प्रभा खेतानः सरस्वती विहार, शाहरदा, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-१९९१